



---

.. shivAShTottaranAmashatakastotram 2 ..

॥ शिवाष्टोत्तरनामशतकस्तोत्रम् २ ॥

Sanskrit Document Information



---

Text title : shivAShTottaranAmashatakastotram2

File name : shivAShTottaranAmashatakastotram2.itx

Category : aShTottarashatanAma

Location : doc\_shiva

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Description-comments : Brihatstotraratnakara 1, Narayana Ram Acharya, Nirnayasagar, stotrasankhya 211

Source : skandapurANe sahyAdrikhaNDe

Latest update : January 19, 2017

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

January 20, 2017

*sanskritdocuments.org*

---



॥ शिवाष्टोत्तरनामशतकस्तोत्रम् २ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।  
देवा ऊचुः ।  
जय शम्भो विभो रुद्र स्वयम्भो जय शङ्कर ।  
जयेश्वर जयेशान जय सर्वज्ञ कामद ॥ १ ॥  
नीलकण्ठ जय श्रीद श्रीकण्ठ जय धूर्जटे ।  
अष्टमूर्तेऽनन्तमूर्ते महामूर्ते जयानघ ॥ २ ॥  
जय पापहरानङ्गनिःसङ्गाभङ्गनाशन ।  
जय त्वं त्रिदशाधार त्रिलोकेश त्रिलोचन ॥ ३ ॥  
जय त्वं त्रिपथाधार त्रिमार्ग त्रिभिरूर्जित ।  
त्रिपुरारे त्रिधामूर्ते जयैकत्रिजटात्मक ॥ ४ ॥  
शशिशेखर शूलेश पशुपाल शिवाप्रिय ।  
शिवात्मक शिव श्रीद सुहृच्छ्रीशतनो जय ॥ ५ ॥  
सर्व सर्वेश भूतेश गिरिश त्वं गिरीश्वर ।  
जयोग्ररूप मीमेश भव भर्ग जय प्रभो ॥ ६ ॥  
जय दक्षाध्वरध्वंसिन्नन्धकध्वंसकारक ।  
रुण्डमालिन् कपालिंस्थं भुजङ्गाजिनभूषण ॥ ७ ॥  
दिगम्बर दिशां नाथ व्योमकश चिताम्पते ।  
जयाधार निराधार भस्माधार धराधर ॥ ८ ॥  
देवदेव महादेव देवतेशादिदैवत ।  
वह्निवीर्य जय स्थाणो जयायोनिजसम्भव ॥ ९ ॥  
भव शर्व महाकाल भस्माङ्ग सर्पभूषण ।  
त्र्यम्बक स्थपते वाचाम्पते भो जगताम्पते ॥ १० ॥  
शिपिविष्ट विरुपाक्ष जय लिङ्ग वृषध्वज ।  
नीललोहित पिङ्गाक्ष जय खट्वाङ्गमण्डन ॥ ११ ॥  
कृत्तिवास अहिर्बुध्न्य मृडानीश जटाम्बुभृत् ।  
जगद्भ्रातर्जगन्मातर्जगत्तात जगद्गुरो ॥ १२ ॥

पञ्चवक्त्र महावक्त्र कालवक्त्र गजास्यभृत् ।  
दशबाहो महाबाहो महावीर्य महाबल ॥ १३ ॥  
अघोरघोरवक्त्र त्वं सद्योजात उमापते ।  
सदानन्द महानन्द नन्दमूर्ते जयेश्वर ॥ १४ ॥  
एवमष्टोत्तरशतं नाम्नां देवकृतं तु ये ।  
शम्भोर्भक्त्या स्मरन्तीह शृण्वन्ति च पठन्ति च ॥ १५ ॥  
न तापास्त्रिविधास्तेषां न शोको न रुजादयः ।  
ग्रहगोचरपीडा च तेषां क्वापि न विद्यते ॥ १६ ॥  
श्रीः प्रज्ञाऽऽरोग्यमायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिम् ।  
विद्या धर्मं मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः ॥ १७ ॥  
इति श्रीस्कन्दपुराणे सह्याद्रिखण्डे  
शिवाष्टोत्तरनामशतकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

---

.. shivAShTottaranAmashatakastotram 2 ..  
was typeset using Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996  
on January 20, 2017

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

